भगवान् शंकर के अड़सठ क्षेत्रों के नाम तथा उनके कीर्तन का महत्त्व

एक बार पार्वती ने भगवान् शंकर से पूछा–प्रभो! आप किन–किन तीर्थों में किन–किन नामों से कीर्तन करने योग्य हैं? यह सब पूर्णरूप से बतावें?

भगवान् शिव ने कहा–देवि! निम्नलिखित 68 दिव्य क्षेत्रों का तत्–तत् नामों सहित कीर्तन करना चाहिये।

1 काशी में महादेव(विश्वनाथ),
2 प्रयाग में महेश्वर,
3 नैमिषारण्य में देवदेव,
4 गया में प्रपितामह(ब्रह्मा),
5. कुरुक्षेत्र में स्थाणु,
6 प्रभास में शशिशेखर,
7 पुष्कर में अजागन्धि
8 विश्वेश्वर में विश्व,
9 अट्टहास में महानाद,
10 महेन्द्र में महाव्रत,
11 उज्जयिनी में महाकाल,
12 मरुकोट में महोत्कट,
13 शङ्कुकर्ण में महातेज,
14 गोकर्ण में महाबल,
15 रुद्रकोटि में महायोग,
16 स्थलेश्वर में महालिङ्ग,
17 हर्षित में हर्ष,
18 वृषभध्वज में वृषभ,
19 केदार में ईशान,
20 मध्यमकेश्वर में शर्व,
21 सुपर्ण में सहस्त्रांशु,
22 कार्तिकेश्वर में सुसूक्ष्म,
23 वस्त्रापथ में भव,
24 कनखल में उग्र,
25 भद्रकर्ण में शिव
26 दण्डकमें दण्डिन्
27 त्रिदण्डा में ऊर्ध्वरेत,
28 कृमिजाङ्गल में चण्डीश,
29 एकाम्र में कृत्तिवास,
30 छागलेय में कपर्दी,
31 कालिञ्जर में नीलकण्ठ,
32 मण्डलेश्वर में श्रीकण्ठ,
33 काश्मीर में विजय,
34 मरुकेश्वर में जयन्त,
35 हरिश्चन्द्र में हर,
36 पुरश्चन्द्र में शङ्कर,
37 वामेश्वर में जटि,
38 कुक्कुटेश्वर में सौम्य,
39 भस्मगात्र में भूतेश्वर,
40 अमरकण्टक में ॐकार,
41 त्रिसन्ध्या में त्र्यम्बक,
42 विरजा में त्रिलोचन,
43 अर्केश्वर में दीप्त,
44 नेपाल में पशुपति,
45 दुष्कर्ण में यमलिङ्ग,
46 करवीर में कपाली,
47 जलेश्वर में त्रिशूली,
48 श्रीशैल में त्रिपुरान्तक,
49 अयोध्या में नागेश्वर,
50 पाताल में हाटकेश्वर,
51 कारोहण में नकुलीश,
52 देविका में उमापति,
53 भैरव में भैरवाकार,
54 पूर्वसागर में अमर,
55 सप्तगोदावरीतीर्थ में भीम,
56 निर्मलेश्वर में स्वयम्भू,
57 कर्णिकार में गणाध्यक्ष,
58 कैलास में गणाधिप,
59 गङ्गाद्वार में हिमस्थान,
60 जललिङ्ग में जलप्रिय,
61 बडवाग्नि में अनल,
62 बदरिकाश्रम में भीम,
63 श्रेष्ठस्थान में कोटीश्वर,

64 विन्ध्याचल में वाराह,
65 हेमकूट में विरूपाक्ष,
66 गन्धमादन में भूर्भुव,
67 लिङ्गेश्वर में वरद तथा
68 लंका में नरान्तक।

देवि! इस प्रकार यहाँ अड़सठ क्षेत्रों में प्रसिद्ध नामों का मैंने तुमसे वर्णन किया है। ये पढ़ने और सुननेवालों के सब पातकों का नाश करनेवाले हैं। अत: बुद्धिमान् पुरुषों को विशेषत: शिव की दीक्षा लेनेवाले पवित्रजनों को तीनों कालों में इन सब नामों का प्रयत्नपूर्वक कीर्तन करना चाहिये। जिस घर में ये अड़सठ नाम लिखे हुए रक्खे रहते हैं, वहाँ भूत, प्रेत, रोग, व्याधि, सर्प, चोर तथा राजा आदि की कभी कोई बाधा उपस्थित नहीं होती है।

देवि! इन सब तीर्थों में आठ बहुत उत्तम हैं। जिनमें स्नान करनेवाला मनुष्य सब तीर्थों में स्नान का फल प्राप्त करता है। नैमिषारण्य, केदार, पुष्कर, कुरुजाङ्गल, काशी, कुरुक्षेत्र, प्रभास तथा हाटकेश्वर – इन आठ तीर्थों में जिसने श्रद्धापूर्वक स्नान किया है, उसने सब तीर्थों में स्नान कर लिया।

पार्वतीजी ने पूछा – महादेव! कलिकाल में मनुष्य किसी प्रकार इन सब क्षेत्रों में स्नान करने में समर्थ न हो सकेंगे। अत: इन आठों तीर्थों का भी जो सारभूत तीर्थ हो, उसका वर्णन कीजिये।

महादेवजी बोले – देवेश्वरि! इन आठों में भी सबसे उत्तम हाटकेश्वरक्षेत्र है, जहाँ मेरी आज्ञा से सब क्षेत्र निवास करते हैं। अन्य जितने तीर्थ हैं, वे भी कलिकाल आने पर यहीं स्थित होते हैं। अत: मोक्ष की इच्छा रखनेवाले पुरुषों को सब प्रकार से यत्न करके इसी क्षेत्र का सेवन करना चाहिये।

सूतजी ऋषियों से कहते हैं – द्विजवरो! इस प्रकार मैंने आप लोगों से अड़सठ क्षेत्रों का उनके नाम और देवताओंसहित वर्णन किया है, जैसा कि महादेवजी ने पार्वती से किया था। जो श्रद्धापूर्वक इन सबके नामों का पठन और कीर्तन करता है, वह उनमें स्नान करने का पुण्य प्राप्त कर लेता है।

(गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के संक्षप्ति स्कन्दपुराणांक के – नागरखण्ड पृ. 878 से)

❁❁❁❁❁❁